Name of the college - A.P.S.M College Barauni
Name-> Dr. Rajesh Kumar Suman
Designation-> [GT] Date-> 13.4.2020
Class-> B.A Part-II [H] Unit-> 05
Paper-> IIIrd
Name of the topic-> National Income Accounts - GDP

⇒ सामाजिक लेखांकन की कठिनाइयाँ।
[Difficulties of Social Accounting]

→ सामाजिक लेखे [Account] तैयार करने में निम्नलिखित कठिनाइयाँ आती हैं।

(1) मापन की कठिनाई [Difficulty in Measurement]
(2) दोहरी गणना [Double Counting]
(3) पूँजी ह्रास [Capital Depreciation]
(4) सार्वजनिक सेवाएँ [Public Services]
(5) माल सूची समायोजन [Inventory Adjustment]
(6) अपूर्ण लेखांकन [Incomplete Accounts]
(7) अन्य कठिनाइयाँ [Other Difficulties]

(1) मापन की कठिनाई :-> जब सामाजिक लेखे (Account) तैयार किये जाते हैं तो सब प्रकार की आय तथा भुगतानों को मुद्रा के रूप में मापा जाता है परन्तु बहुत सी ऐसी वस्तुएँ या सेवाएँ हैं जिन्हें मुद्रा के रूप में आयोजित करना कठिन है। उदाहरण के लिए! - घर में गृहणियों द्वारा अपने परिवारों के लिए गयी सेवाएँ, शिक्षक द्वारा अपने परिवारों के लिए की गई सेवाएँ, शिक्षक द्वारा अपने बच्चों को पढ़ाया जाना, किसान द्वारा अपने लिए खाद्यान्न रख लेना आदि। अतः अनेक ऐसी सेवाएँ लेन-देन जो आर्थिक होती हैं परन्तु बाजारगत नहीं होती हैं अर्थात् जिना मूल्य मुद्रा में नहीं आँका जाता है। यही-यही सामाजिक लेखे तैयार करने में समस्याएँ प्रस्तुत करते हैं।

(2) दोहरी गणना :- सामाजिक लेखे तैयार करने में एक बड़ी कठिनाई दोहरी गणना की है जो इसलिये उत्पन्न होती है क्योंकि मध्यवर्ती वस्तुओं और अंतिम वस्तुओं में भेद सापेक्षिक होता है। एक वस्तु मध्यवर्ती वस्तु है या अंतिम, उस वस्तु के उपयोग पर निर्भर है।

उदाहरण के लिये :- रेडीमेड शर्ट बनाने के कारखाने के लिए कपड़ा मध्यवर्ती वस्तु है। परन्तु उपभोक्ता के लिए यह अंतिम वस्तु बन जाता है। इसी प्रकार जिस आटे को बेकरी में उपभोग किया जाता है वह तो मध्यवर्ती वस्तु है और जिसे घर में प्रयोग किया जाता है, वह अंतिम वस्तु है।

(3) पूंजी ह्रास → पूँजीगत वस्तुओं के ह्रास को मौद्रिक रूप से अनुमानित कर उत्पादन में से इसे घटा दिया जाता है। पूंजी के ह्रास का अनुमान किस प्रकार लगाया जाये।

उदाहरण → कोई ऐसी पूंजी परिसम्पत्ति है जिसकी प्रत्याशित आयु 60 वर्ष है तो उसके वास्तु मूल्य ह्रास दर का हिसाब लगा सकना बहुत कठिन होगा। साथ ही यदि परिसम्पत्तियों की कीमतों में प्रत्येक वर्ष परिवर्तन होता जाये तो यह कठिनाई और भी बढ़ जाती है।

(4) सार्वजनिक सेवाएँ :- सामाजिक लेखों (Accounts) में से एक और समस्या अनेक सार्वजनिक सेवाओं के आगणन की रहती है ये सेवाएँ पुलिस, सेना, स्वास्थ्य, शिक्षा इत्यादि से सम्बन्धित रहती है। इसी प्रकार बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं के योगदान को भी सामाजिक लेखों (Accounts) में सम्मिलित करना कठिन कार्य होता है। क्योंकि इन परियोजनाओं से मिलने वाले विविध लाभों का मौद्रिक रूप से हिसाब लगाना कठिन होता है।

(5) माल सूची समायोजन :- सामाजिक लेखांकन के अन्तर्गत व्यवसाय लेखों में माल (Goods) सूचियों का सही हिसाब लगाने के लिये माल सूची मूल्यांकन के समायोजन की जरूरत होती है जोकि एक बहुत कठिन कार्य है।

Scanned with CamScanner

महत्वपूर्ण है कि फर्में अपनी माल सूचियों उनकी मूल लागतों के हिसाब से दर्ज करती है, उनकी प्रतिस्थापन लागतों के हिसाब से नहीं। वस्तुतः जब कीमतें बढ़ती है तो माल सूची के अंकित मूल्य में आय होता है। परन्तु जब कीमतें गिरती है तो माल सूचियों के अंकित मूल्य में हानि होती है। इस प्रकार माल सूचियों में होने वाले परिवर्तनों का समायोजन करना एक कठिन कार्य है।

(6) अपूर्ण लेखांकन :- राष्ट्रीय आय लेखांकन में लोगों की अपूर्णता भी एक कठिनाई है क्योंकि उनसे अर्थव्यवस्था की उचित जानकारी नहीं हो पाती है। ऐसे लेखे में पूँजी का हस्तान्तरण पुराने समय के क्रय विक्रय का भुगतान, विदेशी उपहार, सहायता एवं अनुदान आदि सम्मिलित है।

(7) अन्य कठिनाइयाँ :- राष्ट्रीय आय लेखांकन की अन्य व्यावहारिक कठिनाइयाँ सांख्यिकीय आँकड़ों की विश्वसनीयता है क्योंकि सरकारी क्षेत्र, परिवार क्षेत्र एवं उत्पादन क्षेत्र के जो आँकड़े उपलब्ध होते है, विश्वसनीय नहीं होते है। इसके अतिरिक्त लेखांकन में अन्तर्सम्बन्धों का विश्लेषण नहीं किया जाता है।

Scanned with CamScanner